दिनांक :- 06-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक़ आज़म (अतिथी शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड (अनुशांगिक)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास (कला)

स्काई :- तीतृय

पत्र :- प्रथम

अध्याय प्राचीन भारतीय इतिहास के स्त्रोत —

स्मारक एंव भवन (Monuments) :- प्राचीन स्मारकों तथा मंदिरों की शैली से हमें उस समय के वास्तुकला के विकास की जानकारी मिलती है। मंदिरों, स्तूपों और विहारों से तत्कालीन धार्मिक विचार धारों का पता चलता है। दक्षिण-पूर्वी एशिया और मध्य एशिया में प्राप्त मंदिरों एंव स्मृतों के अवशेष से भारतीय संस्कृति के प्रसार का पता चलता है। हड़प्पा, मोहनजोदड़ो

तक्षशिला और आस-पास कौशाम्बी, मथुरा, पाटलि पुत्र से प्राप्त भावनों के अवशेष तत्कालीन नगर - निर्माण योजना पर प्रकाश डालते हैं। गान्धार कला की जानकारी हमें तक्षशिला और आस-पास के प्राप्त मूर्तियों से होती है। मथुरा की मूर्तियाँ मथुरा-कला पर प्रकाश डालती है। कुषाणों, गुप्त राजाओं और गुप्तोत्तर काल की मूर्तियाँ जनसाधारण की धार्मिक अवस्थाओं और मूर्तिकला के विकास पर प्रकाश डालती है। भारहुत, साँची बोधगया और अमरावती की मूर्तिकला में जनसाधारण के जीवन की झाँकी मिलती है। अजन्ता, एलोरा और एली फन्टा की गुफाएँ तत्कालीन कला और शिल्प की जानकारी देती है। अजन्ता के चित्रों में मनोभावों की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है। नालन्दा और विक्रमशीला के खण्डहरों से इस स्थानों की गरिमा प्रकट होती है। दक्षिण भारत के प्राचीन मंदिर

शिल्पकला मूर्तिकला तथा चित्रकला पर प्रकाश डालते हैं। विदेशो में भारतीय कला के अवशेष मिले हैं जो भारत और विदेशों के सांस्कृतिक सम्बंध के अध्ययन में सहायता पहुंचाते है! बामियान का विशाल बुद्ध की प्रतिमा कम्बोडिया के अंकोरवाट और जावा का बोरोबुदूर का स्मारक ऐसे ही उदाहरण है! मलाया, सुमात्रा, बाली आदि स्थानों में भारतीय कला के उत्कृष्ट नमूने पाये जाते है। मध्य एशिया तथा रोमन साम्राज्य से प्राप्त भारतीय मूल की विभिन्न वस्तुएँ - रोमन शासकों की सिक्के तथा शराब रखने के बरतन आदि विदेशों के साथ भारत के सम्बंध पर प्रकाश डालते हैं।

अवशेषः- बस्तियों के स्थलों के उत्खनन से प्राप्त अवशेष भी भारत की प्राचीन इतिहास पर यथेष्ठ प्रकाश डालते हैं। आदि मानव के जीवन के सम्बंधों में जानकारी हमें उसकी

बस्तियों से प्राप्त पत्थर और हड्डी के औजारों, मिट्टी के बरतनों, मकानों के खण्डहरों से होती है। पाकिस्तान में सोहन नदी की घाटी में पुरापाषाण युग के प्राप्त पत्थर के खुरदरे औजारों से अनुमान लगाया जाता था कि भारत में आदि मानव ईसा से चार लाख से दो लाख वर्ष पूर्व रहता था। ईसा से दस हजार से छः हजार वर्ष पूर्व की अवधि में मनुष्य के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। मनुष्य खेती करना, पशु पालना, मिट्टी के बरतन बनाना, पत्थर के चिकने औजार बनाना और कपड़ा बुनना सीखा गया। मानव के विकास-प्रक्रिया की जानकारी हमें नवपाषाण युग के अवशेषों से हुई है। मानव की बस्तियों के विभिन्न स्तर उनकी सभ्यता के विकास-क्रम पर प्रकाश डालते हैं। सिंधु घाटी में कई स्थानों पर नीचे के स्तरों में हड़प्पा से पूर्व की संस्कृतियों के अवशेष मिले हैं और ऊपर के स्तर पर हड़प्पा संस्कृति

को मृद्भाण्डो से संस्कृति के विकास क्रम पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है।

अवशेषो में बहुत सी मुहरें भी मिली है। इन मुहरो से भी प्राचीन भारत के इतिहास लिखने मे सहायता मिली है। मोहनजोदड़ो मे पाँच सौ से अधिक मुहरें मिली है। इन मुहरो के आधार पर सिंधु घाटी के निवासी इसके सदस्य या पुरातात्विक साक्ष्य प्राचीन भारत के निवासियो की आर्थिक प्रगति के अन्य महत्वपूर्ण चरण पर प्रकाश डालता है। और यह चरण है भारत मे लौह युग का आगमन लौहे का प्रयोग एक महत्वपूर्ण तकनीकी उपलब्धि माना जाता है। भारत में लौहे के ब्लूचिस्तान, उत्तर पश्चिमी भारत गंगा यमुना के दोआब और दक्षिणी भारत मे पाए गए है। पुरातात्विक साक्ष्य के आधार पर पुरात त्ववेताओ का अनुमान है कि भारत मे लौहे के प्रयोग का आरंभ बतलाते है। लौहे का प्रयोग से कृषि के

Scanned with CamScanner

क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं। लोगों की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति में परिवर्तन आया। जिन लोगों ने लौह के हथियारों एवं औजारों का पहले प्रयोग किए वे उन लोगों से अधिक शक्तिशाली सिद्ध हुए जिन्होंने लौह का प्रयोग बाद में सीखा।

इस प्रकार प्राचीन भारत के इतिहास के अध्ययन एवं निर्माण में साहित्यिक स्रोत की अपेक्षा पुरातात्विक साक्ष्य का अधिक महत्व है। पुरातात्विक साधनों की सहायता से हम प्राचीन भारत के इतिहास को सही मूल्यांकन सम्भव नहीं है। इतिहास की घटनाओं को अधिक तर्कसंगत ढंग से समझ सकते हैं। फिर भी साहित्यिक सामग्री को उपेक्षा नहीं जा सकती है। वास्तविकता तो यह है कि दोनों एक दूसरे के पूरक है। और दोनों साधनों के उचित प्रयोग के बिना प्राचीन भारत की इतिहास का सही मूल्यांकन सम्भव नहीं है।

Scanned with CamScanner

अब पुरातत्वेत्ता वैदिक साहित्य, महाभारत और रामायण में वर्णित स्थानों का उत्खनन करके उनकी भौतिक संस्कृति का सही चित्र प्रस्तुत करने का प्रयत्न कर रहे हैं।

साहित्यिक स्रोत— (Literary sources)

प्राचीन भारतीय साहित्य को दो भागों में बांटा गया है। धार्मिक साहित्य और धर्मेत्तर साहित्य। धार्मिक साहित्य का अध्ययन तीन वर्गों में विभाजित करके किया जाता है— ब्राह्मण साहित्य, बौद्ध साहित्य और जैन साहित्य।

धार्मिक साहित्य:- ब्राह्मण साहित्य:- ब्राह्मण साहित्य में सबसे प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद से प्राचीन आर्यों के धार्मिक सामाजिक और आर्थिक जीवन तथा राजनीतिक संगठन की जानकारी मिलती है। उत्तर वैदिक काल के आर्यों के जीवन का अध्ययन करने के लिए यजुर्वेद सामवेद तथा अथर्ववेद संहिताओं का उपयोग किया जाता है।